सदा जीवंत रहते हैं सद्गुरु

● स्वामी ईश्वरानंद गिरि

जिस तरह पश्चिम में 'फादर्स डे' और 'मदर्स डे' मनाने का रिवाज है (अब तो यह भारत में भी प्रचलन में आ रहा है), उसी तरह भारत में 'गुरुज डे' मनाने की बहुत प्राचीन प्रथा है। इसे हम गुरु पूर्णिमा के नाम से मनाते हैं, जो हर वर्ष आषाढ़ पूर्णिमा के दिन पड़ता है। यह पर्व गुरु को समर्पित होता है, और इस दिन पूरे भारत में शिष्य अपने गुरु की पूजा करते हैं और उनके द्वारा दिखाये गए मार्ग पर निष्ठा के साथ चलते रहने का पुनः संकल्प लेते हैं।

इतिहास और पौराणिक मान्यताएं : आषाढ़ पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाए जाने के कई ऐतिहासिक तथा पौराणिक कारण हैं। स्कन्द पुराण में लिखा है कि हजारों वर्ष पहले इसी तिथि पर आदि गुरु शिव ने सप्त ऋषियों को ब्रह्म के बारे में ज्ञानोपदेश देना आरंभ किया था। तब से आषाढ़ पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाया जाने लगा। इसी तिथि को गौतम बुद्ध तथा जैन तीर्थंकर महावीर ने अपने प्रथम शिष्य बनाए और गुरु के रूप में अपने कार्य की शुरूआत की। यह दिन बौद्ध-धर्म तथा जैन धर्म के अनुयायियों के लिए भी पवित्र है। इसे व्यास पूर्णिमा भी कहते हैं क्योंकि महर्षि व्यास, जिन्होंने वेदों का पुनर्घटन किया, और महाभारत, श्रीमदभागवत तथा पुराणों की रचना की, और जो गुरुओं के गुरु माने जाते हैं, उनका जन्म इसी तिथि को हुआ था। इस वजह से इस पर्व का महत्व और भी बढ़ जाता है। ऐसा कहा जाता है कि गुरु पूर्णिमा के दिन गुरु-तत्त्व की शक्ति हजारों गुना अधिक रहती है, और इस पावन दिवस पर गुरु की पूजा करने से, गुरु के आशीर्वाद बाकी सब दिनों की तुलना में कहीं अधिक मात्रा में प्राप्त किए जा सकते हैं।

कबीर वाणी : भारत में गुरु को बहुत ऊंचा स्थान दिया गया है। संत कबीर ने यहां तक कहा था कि शिष्य को भगवान से पहले गुरु की वंदना करने में संकोच नहीं करना चाहिए, ह्यगुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पांय। बलिहारी गुरु आपनो, जिन गोविंद दियो बताय।ह्न इस

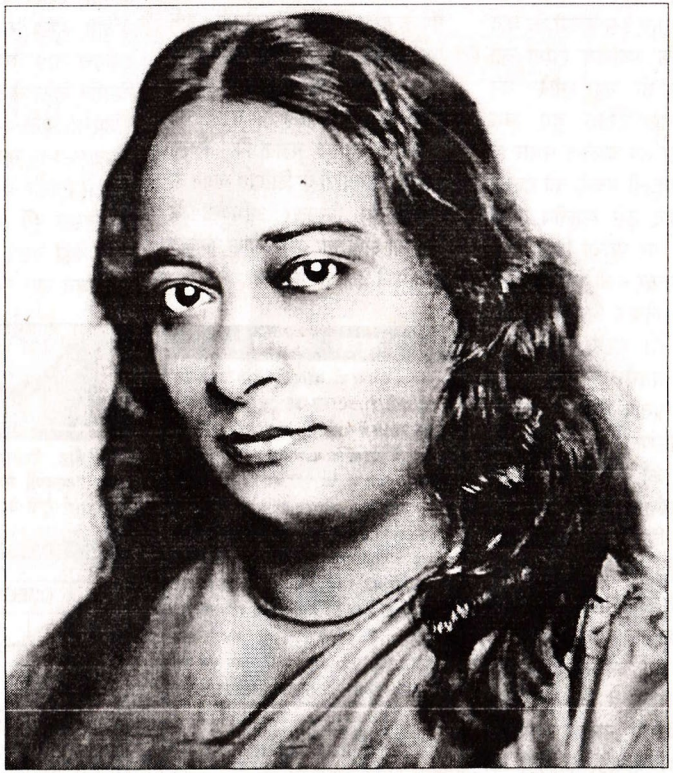

दोहे को पढ़ते समय हमें यह याद रखना चाहिए कि कबीर साहब यहां एक साधारण शिक्षक की नहीं, अपितु एक सदुरु की बात कर रहे हैं। एक साधारण शिक्षक केवल सांसारिक ज्ञान दे सकता है, परंतु सदुरु योग्य शिष्य में दिव्य ज्ञान जागृत कर देते हैं, ईश्वर से मिलन करा देते हैं, और त्रि-ताप से सदा के लिए मुक्त कर देते हैं। दूसरों में दिव्य ज्ञान जगा पाने के लिए गुरु में स्वयं दिव्य ज्ञान का होना आवश्यक है। इसीलिए ईश्वर-प्राप्त संत ही सदुरु बन सकते हैं, और इसीलिए सदुरु का मिलना दुर्लभ कहा गया है। कबीर साहब ने ही कहा है, ह्यइह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान। शीश दिये जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान।।

युक्तेश्वर गिरि : ऐसे ही एक सदुरु हुए, परमहंस योगानन्दजी। अपनी विश्व-विख्यात पुस्तक, ऑटोबायोग्राफी ऑफ अ योगी (हिन्दी में योगी कथामृत) में अपने गुरु, स्वामी श्री युक्तेश्वर गिरि का जो श्रद्धा-सिक्त और भाव-परिपूर्ण चरित्र-वर्णन उन्होंने किया, उसे पढ़कर गुरु और शिष्य, दोनों के चरणों में पाठक का मस्तक स्वयं ही झुक जाता है। अपनी पुस्तक का शुभारंभ योगानन्दजी ने अपने गुरु का स्मरण करते हुए इस प्रकार किया, ह्यपरम सत्य की खोज और उसके साथ जुड़ा गुरु-शिष्य संबंध प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति की विशेषता रही है। इस खोज के मेरे अपने मार्ग ने मुझे एक भगवत्स्वरूप सिद्ध पुरुष के पास पहुंचा दिया, जिनका सुगढ़ जीवन युग-युगांतर का आदर्श बनने के लिए तराशा गया था। वे उन महान विभूतियों में से एक थे जो भारत का सच्चा वैभव रहे हैं।ह्न अपने गुरु के संदर्भ में लिखे गए ये सुंदर शब्द स्वयं योगानन्दजी के अद्भुत जीवन-चरित्र के लिए भी खरे उतरते हैं। हालांकि उनका अधिकांश जीवन अमेरिका में योग-प्रचार में बीता, उनकी गिनती भारत के महानतम संतों में की जाती है। पूरे पाश्चात्य जगत में आज अगर योग को इतनी स्वीकृति मिल रही है, इसका अधिकांश श्रेय योगानन्दजी को जाता है, जिहोंने अपना सम्पूर्ण जीवन भारत और पश्चिम में क्रिया योग के प्रचार के लिए समर्पित कर दिया।

परमहंस योगानंद की सीख : अपने योग संदेश का पूरे विश्व में प्रचार करने के लिए उन्होंने दो संस्थाएं स्थापित की, 1917 में भारत में योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इंडिया (मुख्यालय, रांची, झारखंड); और 1920 में अमेरिका में सेल्फ-रियलाइजेशन फेलोशिप (मुख्यालय, लॉस एंजिल्स, कैलिफोर्निया)। इन दोनों संस्थानों के द्वारा आज भी योगानन्दजी की क्रिया योग की शिक्षाएं सभी जिज्ञासुओं के लिए उपलब्ध हैं। परमहंस योगानन्दजी का कहना था की सभी सच्चे गुरु अमर होते हैं। अपने शिष्यों का मार्गदर्शन करने के लिए और उन पर कृपा-वृष्टि करने के लिए एक सदुरु को शरीर में बने रहने की कोई आवश्यकता नहीं होती। जो भी सच्चा शिष्य अपने गुरु की शिक्षाओं का निष्ठापूर्वक पालन करता है, वह अपने गुरु की जीवंत उपस्थिति का अनुभव अवश्य करता है।

गुरु पूर्णिमा पर विशेष

वे कहते थे कि सदुरु अपने शिष्य के कूटस्थ (भ्रूमध्य में स्थित विचार और संकल्प शक्ति का केंद्र) में रहते हैं, और जब कोई शिष्य पूरे मन-प्राण से गुरु का स्मरण करता है, तो वह अपने गुरु को हमेशा अपने पास पाता है। अतः एक सदुरु और उनके सच्चे शिष्य में कोई दूरी नहीं रहती। आइये, इस गुरु-पूर्णिमा के दिन हम सब अपने-अपने सदुरु का भक्तिपूर्ण स्मरण करें और उनकी जीवंत उपस्थिति और मार्गदर्शन का लाभ उठाएं।

(लेखक योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इंडिया के महासचिव हैं)

सदा जीवंत रहते हैं सद्गुरु

गुरु पूर्णिमा पर विशेष

स्वामी ईश्वरानंद जी

जिस तरह पशिम में 'फादर्स डे' और 'मदर्स डे' मनाने का रिवाज है (अब तो यह भारत में भी प्रचलन में आ रहा है), उसी तरह भारत में 'गुरुज डे' मनाने की बहुत प्राचीन प्रथा है। लेकिन इसे हम गुरु पूर्णिमा के नाम से मनाते हैं, जो हर वर्ष आषाढ़ पूर्णिमा के दिन पड़ता है। यह पर्व गुरु को समर्पित होता है और इस दिन पूरे भारत में शिष्य अपने गुरु की पूजा करते हैं और उनके द्वारा दिखाये गये मार्ग पर निष्ठा के साथ चलते रहने का पुनः संकल्प लेते हैं।

आषाढ़ पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाये जाने के कई ऐतिहासिक तथा पौराणिक कारण हैं। स्कंद पुराण में लिखा है कि हजारों वर्ष पहले इसी तिथि पर आदि गुरु शिव ने सप्त ऋषियों को ब्रह्म के बारे में ज्ञानोपदेश देना आरंभ किया था। तब से आषाढ़ पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाया जाने लगा, क्योंकि इसी तिथि को गौतम बुद्ध तथा जैन तीर्थंकर महावीर ने अपने प्रथम शिष्य बनाये और गुरु के रूप में अपने कार्य की शुरुआत की। यह दिन बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म के अनुयायियों के लिए भी पवित्र है।

इसे व्यास पूर्णिमा भी कहते हैं, क्योंकि महर्षि व्यास, जिन्होंने वेदों का पुनर्घटन किया और महाभारत, श्रीमद् भागवत तथा पुराणों की रचना की और जो गुरुओं के गुरु माने जाते हैं, उनका भी जन्म इसी तिथि को हुआ। इस वजह से इस पर्व का महत्व भी बढ़ जाता है। ऐसा कहा जाता है कि गुरु पूर्णिमा के दिन गुरु-तत्त्व की शक्ति हजारों गुना अधिक रहती है और इस पावन दिवस पर गुरु की पूजा करने से गुरु के आशीर्वाद बाकी सब दिनों की तुलना में कहीं अधिक मात्रा में प्राप्त किये जा सकते हैं।

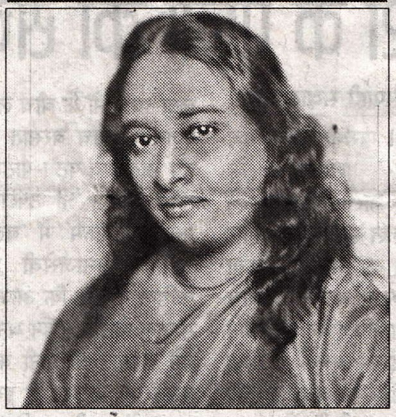

भारत में गुरु को बहुत ऊंचा स्थान दिया गया है। संत कबीर ने यहां तक कह दिया कि शिष्य को भगवान से पहले गुरु की वंदना करने में संकोच नहीं करना चाहिए: 'गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पांय । बलिहारी गुरु आपनो जिन गोविंद दियो बताय।' इस दोहे को पढ़ते

समय हमें यह याद रखना चाहिए कि कबीर साहब यहां एक साधारण शिक्षक की नहीं, अपितु एक सद्गुरु की बात कर रहे हैं। एक साधारण शिक्षक केवल सांसारिक ज्ञान दे सकता है, परंतु सद्गुरु योग्य शिष्य में दिव्य ज्ञान जागृत कर देते हैं, ईश्वर से मिलन करा देते हैं, और त्रि-ताप से सदा के लिए मुक्त कर देते हैं। दूसरों में दिव्य ज्ञान जगा पाने के लिए गुरुं में स्वयं दिव्य ज्ञान का होना आवश्यक है। इसी लिए ईश्वर-प्राप्त संत ही सद्गुरु बन सकते हैं और इसी लिए सद्गुरु का मिलना दुर्लभ कहा गया है। कबीर साहब ने कहा है: यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान। शीश दिये जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान॥

ऐसे ही एक सद्गुरु हुए परमहंस योगानंदजी। अपनी विश्व-विख्यात पुस्तक 'योगी कथामृत' में अपने गुरु, स्वामी श्री युक्तेश्वर गिरि का, जो श्रद्धा-सिक्त और भाव-परिपूर्ण चरित्र-वर्णन उन्होंने किया, उसे पढ़कर गुरु और शिष्य, दोनों के चरणों में पाठक का मस्तक स्वयं ही झुक जाता है। अपनी पुस्तक का शुभारंभ योगानंदजी ने अपने गुरु का स्मरण करते हुए इस प्रकार किया: परम सत्य की खोज और उसके साथ जुड़ा गुरु-शिष्य संबंध प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति की विशेषता रही है। इस खोज के मेरे अपने मार्ग ने मुझे एक भगवत्स्वरूप सिद्ध पुरुष के पास पहुंचा दिया, जिनका सुगढ़ जीवन युग-युगांतर का आदर्श बनने के लिए तराशा गया था। वे उन महान विभूतियों में से एक थे, जो भारत का सच्चा वैभव रहे हैं।

अपने गुरु के संदर्भ में लिखे गये ये सुंदर शब्द स्वयं योगानंदजी के अद्भुत जीवन-चरित्र के लिए भी खरे उतरते हैं। हालांकि उनका अधिकांश जीवन अमेरिका में योग-प्रचार में बीता, उनकी गिनती भारत के महानतम संतों में की जाती है। पूरे पाश्चात्य जगत में आज अगर योग को इतनी स्वीकृति मिल रही है, इसका अधिकांश श्रेय योगानंदजी को जाता है, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन भारत और पश्चिम में क्रिया योग के प्रचार के लिए समर्पित कर दिया।

अपने योग संदेश का पूरे विश्व में प्रचार करने के लिए उन्होंने दो संस्थाएं स्थापित कीं: 1917 में भारत में योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इंडिया (मुख्यालय, रांची, झारखंड) और 1920 में अमेरिका में सेल्फ-रियलाइजेशन फेलोशिप (मुख्यालय, लॉस एंजिल्स, कैलिफोर्निया)। इन दोनों संस्थानों के द्वारा आज भी योगानंदजी की क्रिया योग की शिक्षाएं सभी जिज्ञासुओं के लिए उपलब्ध हैं।

परमहंस योगानंदजी का कहना था कि सभी सच्चे गुरु अमर होते हैं। अपने शिष्यों का मार्गदर्शन करने के लिए और उन पर कृपा-वृष्टि करने के लिए एक सद्गुरु को शरीर में बने रहने की कोई आवश्यकता नहीं होती। जो भी सच्चा शिष्य अपने गुरु की शिक्षाओं का निष्ठापूर्ण पालन करता है, वह अपने गुरु की जीवंत उपस्थिति का अनुभव अवश्य करता है। वे कहते थे कि सद्गुरु अपने शिष्य के कूटस्थ (भ्रूमध्य में स्थित विचार और संकल्प शक्ति का केंद्र) में रहते हैं और जब कोई शिष्य पूरे मन-प्राण से गुरु का स्मरण करता है, तो वह अपने गुरु को हमेशा अपने पास पाता है। अतः, एक सद्गुरु और उनके सच्चे शिष्य में कोई दूरी नहीं रहती।

आइये, इस गुरु-पूर्णिमा के दिन हम सब अपने-अपने सद्गुरु का भक्तिपूर्ण स्मरण करें और उनकी जीवंत उपस्थिति और मार्गदर्शन का लाभ उठायें।